E-ISSN: 2583-9667
Indexed Journal
Peer Reviewed Journal
https://multiresearchjournal.theviews.in

Received: 05-06-2023
Accepted: 16-07-2023

INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCE RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY

Volume 1; Issue 1; 2023; Page No. 655-657

भारत में सामाजिक अनुसंधान के समक्ष चुनौतियाँ: एक विश्लेषण

डॉ. रीता मौर्या

असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र कन्या महाविद्यालय आर्य समाज भूड़, बरेली, उत्तर प्रदेश, भारत

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.13744774

Corresponding Author: डॉ. रीता मौर्या

Abstract

जिज्ञासा और ज्ञान की खोज से प्रेरित मनुष्य लगातार विभिन्न घटनाओं के पीछे के कारणों को जानने की कोशिश करता रहता है, चाहे वे प्राकृतिक हों या सामाजिक। सामाजिक घटनाएँ, जो स्वाभाविक रूप से जटिल होती हैं, उनके अंतर्निहित कारणों को जानने के लिए वैज्ञानिक जाँच के अधीन होती हैं। नए और मौजूदा सिद्धांतों को मान्य करने और उनका पता लगाने में शोध एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। सामाजिक अनुसंधान एक व्यवस्थित और वैज्ञानिक पद्धति है जिसका उद्देश्य अनुभवजन्य जाँच के माध्यम से सामाजिक वास्तविकताओं को समझना और उनका विश्लेषण करना है। हमारे देश में सामाजिक अनुसंधान की एक समृद्ध ऐतिहासिक परम्परा रही है जिसने मनुस्मृति और कौटिल्य के अर्थशास्त्र जैसे प्राचीन ग्रंथों से होते हुए वर्तमान में भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (ICSSR) जैसी संस्थाओं द्वारा सुगम बनाए गए समकालीन अध्ययनों तक सामाजिक अनुसंधान पद्धतियों में विकास देखा है। महत्वपूर्ण प्रगति के बावजूद, भारत में सामाजिक अनुसंधान को फंडिंग की कमी, पद्धतिगत मुद्दों और अधिक प्रासंगिक और संदर्भ-संवेदनशील अध्ययनों की आवश्यकता जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। यह शोधपत्र भारत में सामाजिक अनुसंधान के ऐतिहासिक विकास, वर्तमान स्थिति और चुनौतियों पर चर्चा करता है, जिसमें बेहतर पद्धतियों और भारतीय समाज की जटिलताओं के साथ अधिक संरेखण की आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया है।

मूलशब्द: सामाजिक अनुसंधान, भारत, वैज्ञानिक पद्धति, ऐतिहासिक विकास, अनुसंधान चुनौतियां, आईसीएसएसआर, कार्यप्रणाली, सामाजिक घटनाएं, अनुभवजन्य जांच, भारतीय समाज

Introduction

मनुष्य एक चिन्तनशील व जिज्ञासु प्राणी है। वह अज्ञात तथ्यों का पता लगाने की दिशा में निरन्तर आगे बढ़ता रहा है। वह विभिन्न प्रकार की घटनाओं के पीछे छिपे कारणों को ढूंढ निकालने मे वैज्ञानिक विधियों की कोशिश में सदैव उन्मुख रहा है चाहे वो प्राकृतिक घटनाएं हो या सामाजिक घटनाएं। सामाजिक क्रियाएं घटनाएं अपने आप में अत्यन्त जटिल है परन्तु मानव ने उसके पीछे के विभिन्न कारणों को खोजने का प्रयास जारी रखा। उसने विभिन्न घटनाओं के सम्बन्ध में वैज्ञानिक विधियों का प्रयोग करते हुए कार्य कारण सम्बन्ध ढूंढने का प्रयास करते हुए नये सिद्धान्तों का निर्माण किया और पुराने सिद्धान्तों की सत्यता की जाँच की। किसी भी सत्य की खोज एवं उसकी पुष्टि हेतु अनुसंधान का होना अनिवार्य है। मानव की जिज्ञासा का आधार चाहे प्राकृतिक दशाएं हो या सामाजिक जटिलताएं, इससे सम्बन्धित ज्ञान का करण करना तथा प्राप्त ज्ञान का सत्यापन करना ही अनुसंधान है। वस्तुत: अनुसंधान घटनाओं के बारे में ज्ञान प्राप्त करने और उन घटनाओं के मूल तक पहुँचने एवं कार्य-कारण सम्बन्धों का पता लगाने का एक व्य- वस्थित वैज्ञानिक तरीका है। और जब सामाजिक क्षेत्र में प्रश्नों के उत्तर खोजने का क्रमबद्ध एवं व्यवस्थित प्रयास किया जाता है तो उसे ही समाजिक अनुसंधान कहा जाता है। जी. एम. फिशर लिखते हैं कि, "सामाजिक अनुसंधान सामाजिक परिस्थिति में सुनिश्चित कार्य प्रणालियों का प्रयोग है जिसका उद्देश्य किसी समस्या को हल करना या किसी उपकल्पना का परीक्षण करना या एक सामाजिक प्रघटना की खोज या प्रघटनाओ के बीच नवीन सम्बन्धों का पता लगाना है।"

सामाजिक अनुसंधान में सामाजिक यथार्थताओ की वैज्ञानिक

विधि द्वारा खोज पर विशेष बल दिया जाता है। सामाजिक अनुसंधान का अर्थ स्पष्ट करते हुए पी. वी. यंग ने लिखा है कि, "सामाजिक अनुसंधान को एक ऐसे वैज्ञानिक प्रयत्न के रूप मे परिभाषित किया जा सकता है जिसका उद्देश्य तार्किक एवं क्रमबद्ध पद्धतियों द्वारा नए तथ्यों की खोज अथवा पुराने तथ्यों की परीक्षा और सत्यापन, उनके क्रमों, पारस्परिक सम्बन्धों, कार्य कारण की व्याख्या एवं उन्हें संचालित करने वाले स्वाभाविक नियमों का विश्लेषण करना है।"[1]
अन्य शब्दों में सामाजिक अनुसंधान एक ऐसी वैज्ञानिक विधि है जिसके द्वारा सामूहिक जीवन में व्याप्त विभिन्न प्रकार की घटनाओं की प्रकृति, उनके अन्तरसम्बंधों तथा उनमें, अंतर्निहित प्रक्रियाओं का पक्षपात रहित रूप से विश्लेषण करके एक सामान्य सिद्धान्त अथवा प्रवृत्ति को ज्ञात किया जा सके। सैद्धान्तिक व व्यवहारिक दोनों ही प्रकार की समस्याओं के हल के लिए सामाजिक अनुसंधान किया जा सकता है । P.V- Young का मानना है कि - "सामाजिक अनुसंधान का मूलभूत उद्देश्य चाहे वह तात्कालिक हो या दीर्घकालीन, सामाजिक जीवन को समझना और ऐसा करके उस पर अधिक नियंत्रण प्राप्त करना है।
भारत दुनिया की सबसे प्राचीन सभ्यताओ में से एक है, जिसकी एक समृद्ध सांस्कृतिक विरासत है। हमारे देश में प्राचीन काल से ही लेखन व शोध की परम्परा रही है। दूसरी व तीसरी शताब्दी के आस-पास सामाजिक दर्शन व सामाजिक विचारों पर लेखन के साथ ही सामाजिक विषयों पर अनुसंधान प्रारम्भ हो गया था। मनु का धर्मशास्त्र एवं कौटिल्य का अर्थशास्त्र इसका उदाहरण है।
भारत में स्वतन्त्रतापूर्ण और पश्चात सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक स्थिति भिन्न-भिन्न रही जिससे सामाजिक विषय में परिवर्तन हुए और अनुसंधान की विधियां व तकनीकी भी। भारत में सामाजिक विज्ञान में अनुसंधान का एक विस्तृत इतिहास रहा है। 19 वीं शताब्दी में ब्रिटिश शासकों ने भारतीय समाज पर व्यापक तथ्य व जानकारी एकत्र करना शुरु किया ताकि वे भारतीय समाज को भली-भाँति समझ सकें। स्वतंत्रता के पश्चात देश के सुनियोजित विकास एवं सामाजिक आर्थिक नियोजन हेतु भारतीय समाज के बारे में जानकारी की अत्यन्त आवश्यकता हुई ।
फलस्वरूप 1950 के दशक में कई शोध संस्थान अस्तित्व में आए इनमें दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स दिल्ली, भारतीय सांख्यिकी संस्थान कलकत्ता, राष्ट्रीय अनुप्रयुक्त आर्थिक अनुसंधान परिषद् दिल्ली, आर्थिक विकास संस्थान दिल्ली एवं कृषि मंत्रालय द्वारा स्थापित कृषि आर्थिक अनुसंधान केन्द्र प्रमुख थे।
वर्ष 1969 में भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् (ICSSR) की स्थापना के साथ ही भारत में सामाजिक विज्ञान को एक महत्वपूर्ण दिशा मिली। ICSSR का प्राथमिक उद्देश्य सामाजिक विज्ञान में अनुसंधान को बढ़ावा देना और इसके उपयोग को सुविधाजनक बनाना था। ICSSR की एक रिपोर्ट (2007) के अनुसार - अनुसंधान मुख्यत: दो कारकों पर आधारित होता है, पहला- समाज के कार्यविधियों से सम्बन्धित ज्ञान एवं समाज के विभिन्न पक्षों, समाजिक-सांस्कृतिक ज्ञान, समाज के अध्ययन में रुचि एवं उन तथ्यों को समझना जो इन्हें प्रभावित करते हैं, दूसरी- नीति निर्माताओं, सरकारी प्रबन्ध तंत्रों, नागरिकों एवं निजी निकायों को व्यावहारिक आवश्यकता हेतु विश्वसनीय आकड़े उपलब्ध कराना।[2]
किसी भी सत्य की खोज एवं उसकी पुष्टि हेतु अनुसंधान का होना अनिवार्य है। समय-समय पर विभिन्न विषयों की खोज और उनके अध्ययन की प्रमाणिकता भी शोध के माध्यम से सम्भव हो पाती है। परन्तु साथ ही साथ अनुसंधान की राह में अनेक समस्याएँ व चुनौतियां भी दिखलायी पड़ती हैं। विशेषत: भारत जैसे देश में जहाँ सामाजिक व सांस्कृतिक रूप से अत्यधिक विभिन्नता पायी जाती है। विगत कुछ दशकों में सामाजिक अनुसंधान के परम्परागत विधियों में परिवर्तन आया है। अब अनुसंधान अपनी परम्परागत अंतरवैषयिक सीमाओं से आगे बढ़ चुका है। अब यह विभिन्न सामाजिक-आर्थिक एवं राजनैतिक सन्दर्भों पर आधारित है जिसमें विकास एवं वैश्वीकरण से उत्पन्न प्रमुख क्षेत्रों पर प्रकाश डाला जाता है, शिक्षा एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी शोध भी प्रमुखता से हो रहे है। बहुत-सी ऐसी संस्थाएं है जिनके द्वारा विकास एवं धारणीय विकास से सम्बन्धित शोध प्रोजेक्ट आदि कराए जा रहे हैं।वर्तमान समय में महिलाओं पर आधारित शोध जैसे महिला अध्ययन लैंगिक असमानता, कन्या भ्रूण हत्या, घरेलू हिंसा, महिला शोषण अत्यधिक अध्ययन हो रहे है। पर्यावरण आधारित अनुसंधान भी समाजविज्ञान के शोधार्थियों में प्रचलित है। भारत में जातिगत मुद्दे, आरक्षण, दलित विमर्श ऐसे विषय हैं जिन पर वर्षो से अध्ययन होता रहा है।
सामाजिक अनुसंधान के समक्ष चुनौतियां-भारतीय परिवेश में सामाजिक शोध ऐसी जगह पर दिखायी पडता है जहाँ इसकी कोई निश्चित दिशा स्पष्ट नहीं हो पा रही है यद्यपि भारत में बहुत से अध्ययन होते रहे हैं परन्तु जहाँ तक गुणवत्ता की बात है, अभी बहुत कुछ होना शेष है। बहुत से ऐसे तथ्य हैं जो अनुसंधान की गुणवत्ता व संख्या को प्रभावित करते रहे हैं। सारावनवेल ने भारत मे सामाजिक अनुसंधान की दशा पर अपने विचार दिए हैं। उनका मानना है कि भारत में सामाजिक समस्याएं अत्यन्त जटिल एवं संख्या में बहुत अधिक हैं तथा भारत में सामाजिक शोध हेतु अनुदान के स्रोत अपेक्षाकृत कम है। इसके अतिरिक्त भारत में शोध आधुनिक शोध प्रविधियों पर आधारित नहीं है। साथ ही भारत में कुशल पारंगत व योग्य शोधार्थियों की कमी है।[3]
भारत में पश्चिमी वैचारिकी हमारे यहाँ के समाज के अध्ययन में प्रभावी हो जाती है जिससे न सिर्फ इसका प्रभाव अवधारणा, सिद्धान्त व अध्ययन की विधियों मे दिखायी पड़ता है अपितु अध्ययन के विषय पर भी दिखलायी पड़ता है। फलस्वरूप बहुत से ऐसे विषय जो वास्तव मे भारतीय समाज से जुड़े होते है वो या तो छूट जाते हैं या उन पर अधिक ध्यान नहीं दिया जाता।[4]
कई बार समाज वैज्ञानिकों का जुड़ाव आम भारतीय जनमानस की समस्याओं से नहीं हो पाता जिसकी वजह से वे उन समस्याओं की जानकारी व अनुभव नहीं कर पाते हैं। जिससे

महिलाओं ,गरीबी, कृषि आदि से जुड़े कई विषयों का उचित पक्ष सामने नहीं आ पाता। समाज के कुछ विशेष पक्षों पर ध्यान अधिक देने के कारण अन्य पक्ष पीछे रह जाते हैं। हमारे देश में कार्य करने की विषम परिस्थितियां, मौलिक विषयों पर कार्य में कमी, एकदम नये विषय पर अध्ययन का जोखिम उठाने वाले अनुसंधानकर्ताओं की कमी आदि कुछ ऐसी चुनौतियां हैं जो शोध की गुणवत्ता व संख्या दोनों को प्रभावित कर रही हैं। वर्तमान समय में भारत में सामाजिक अनुसंधान के समझ कई समस्याएं व चुनौतियां हैं। जिसमें भारतीय सामाजिक समस्याओं का अत्यधिक जटिल होना, शोध हेतु अनुदान की कमी, संस्था का असहयोग, योग्य शोधार्थियों की कमी, मौलिक विषयों पर कार्य में कमी आदि प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त अध्ययन के अनुरूप शोध पद्धति का चुनाव, तथ्यों के विश्लेषण हेतु सीमित ज्ञान, उत्तरदाताओ की खराब प्रतिक्रिया, तथ्यों की विश्वसनीयता, प्रशिक्षित अनुसंधानकर्ताओं की कमी व समय प्रबंधन भी अनुसंधान के समक्ष एक चुनौती के रूप में खड़े हैं।

फिर भी पूर्व में बहुत से समाज वैज्ञानिकों द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर कार्य किया गया है और वर्तमान समय में भी बहुत से उत्कृष्ट कार्य हो रहे हैं। निजी संस्थाएं, गैर सरकारी संगठन आदि शोधार्थियों के लिए रोजगार का अच्छा अवसर उपलब्ध कराने में सहायक हो सकते है बशर्ते योग्य व गुणी शोधार्थी शोध के इस कार्य को आगे ले जाएं।

संदर्भ

1. Young PV. Scientific Social Survey and Research. New Jersey: Prentice-Hall Inc; c1939. p. 44.
2. Department for International Development (DFID), South Asia Regional Hub (SARH). Mapping of Social Sciences Research in India; c2011. p. 6.
3. Saravanavel P. Research Methodology. New Delhi: Kitab Mahal Publications; c2018.
4. Sarma S. Social science research in India: A review. Economic and Political Weekly. 1992;27(49/50):2642-2446.
5. Science Direct. The International Information of Library Review. 2003;35(2-4):217-232.

Creative Commons (CC) License
This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.